दलित नवजागरण और महात्मा गांधी

डॉ. चन्दा कुमारी

आज के बौद्धिक समाज में यह प्रश्नाकुलता तीव्रता से व्याप्त है कि गांधी और दलित चिंतन में कितनी आधुनिक सर्जनात्मकता शेष है या यह कोरी बहस विवाद-संवाद तक ही सीमित है। इतना ही नहीं गांधी आज ज्यादा आधुनिक और अर्थ- व्यंजक क्यों लगते हैं? ज्यादातर भारतीय चिंतक इधर के वर्षों में अपनी परंपराओं की वास्तविक थाती गांधी में क्यों पाते हैं? साथ ही गांधी का साम्राज्यवाद- उपनिवेशवाद तथा पश्चिमवाद विरोधी चिंतन एक नया पाठ टैक्स्ट बनकर चुनौती के रूप में उपस्थित क्यों हो गया? गांधी और दलित भारत के जागरण से जुड़े इस तरह के तमाम असुविधाजनक और बेहद जटिल समस्यामूलक प्रश्नों पर श्री भगवान सिंह ने गांधी और दलित-भारत- जागरण शीर्षक पुस्तक में बड़े पैनेपन से 'डिस्कोर्स' या भाष्य प्रस्तुत किया है। यह भाष्य इस अर्थ मीमांसा या एपिस्टिमोलॉजिकल लॉजिक पर केंद्रित है कि गांधी को लाल फरेरा और भगवा दरेरा की दोनों अतिवादी दृष्टियों ने तर्क-विकृति के साथ समझाया है। नतीजा यह हुआ है कि वे अपने आइडियालॉजिकल आग्रहों के कारण गलत पाठ संदर्भों में रखकर कसने के कारण उन्हें ठीक से डी-कन्स्ट्रक्ट करने में असमर्थ रहे हैं।

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के दिनों में गांधी की 'महात्मा' छबि को 'फ्रॉड' कहनेवाले पहले व्यक्ति बाबा साहेब अंबेडकर हैं। भारतीय राजनीति में गांधी को अंबेडकर 'हिंदू खलनायक' घोषित करते हैं और आधुनिक नवजागरण के गांधी-युग या सत्याग्रह- युग को 'अंधकार काल' नाम देते हैं। अपने निबंध 'रानाडे, गांधी और जिन्ना' में अंबेडकर ने घोषित तौर कहा है कि गांधी और जिन्ना "इन दोनों महानुभावों ने भारत की राजनीतिक प्रगति को ठप्प कर दिया है।"[1] श्री भगवान सिंह की नई पुस्तक अपनी समग्र-देन में अंबेडकर के गांधी विषयक विचारों का पुनः पाट करती है और पाती है कि गांधी को खलनायक, हिंदू-हिपोक्रेट, पूँजीपतियों का दलाल, फ्राड महात्मा, घटिया प्रतिक्रियावादी, वर्ण-व्यवस्था का सिरफिरा समर्थक कहना अनुचित है। श्री भगवान सिंह ने पुस्तक की भूमिका में ही पाठक को चेताया है कि गांधी के साथ वामपंथियों और दलितवादियों ने छत्तीस का आंकड़ा बनाया हुआ है। गांधी को ध्वस्त करने के लिए "ये मनगढ़ंत बातों को परोसने और ऐतिहासिक तथ्यों की हत्या करने में भी संकोच नहीं करते हैं। इधर दलित लेखन के उभार ने इस कार्य को और द्रुतगति से बढ़ा दिया है।"[2] श्रीभगवान सिंह ने राजनीतिशास्त्र और हिंदी साहित्य में आलोचना की प्रगतिवादी धारा के भीतर से गुजरते हुए पाया है कि "गांधी को समाज, राजनीति देश विकास, प्रगति, गरीब, दलित आदि सबका खलनायक बनाकर रख दिया गया है। हिंदी आलोचना में विगत कई वर्षों से प्रगतिवाद, वामपंथ के नाम से एक प्रवृत्ति दिखाई देती रही है कि हिंदी के रचनाकारों का मूल्यांकन करते समय जहाँ नहीं भी आवश्यक हो, वहाँ भी गांधी को घसीट लाया जाता है। और उनके विरुद्ध टिप्पणियों की जाती हैं"3 हिंदी की प्रगतिवादी आलोचना आचार्य रामचंद्र शुक्ल, प्रसाद, निराला, माखनलाल चतुर्वेदी, नवीन आप्टे पर विचार करते हुए गांधी की घेरकर हत्या करती रही है।

गांधी और दलित- भारत- जागरण की पूरी अंतर्ध्वनि में गांधी के ऊपर हिंदी साहित्य और आलोचना में होने वाले अतार्किक अनपढ़ प्रहारों की निस्सारता की और प्रबुद्ध पाठकों, बौद्धिकों, विमर्श विश्लेषकों, आचार्यों, महंतों को ध्यान दिलाना है। श्री भगवान सिंह का यह कथन कि "आजकल हिंदी साहित्य में 'गांधी प्रभाव' को लेकर बहुत कुछ ऐसा ही बर्ताव वर्ग-चेतना एवं दलित-चेतना के ध्वजारोहियों द्वारा हो रहा है। यह कहने में तनिक भी अतिवाद नहीं कि इनमें अधिकतर ऐसे

आलोचक हैं जो गांधीजी को पढ़ने-समझने का कोई उपक्रम किए बगैर धाराप्रवाह रूप से उनके खिलाफ फतवेबाजी किए जा रहे हैं। इसका एक कारण मेरी समझ में यह है कि हिंदी में गांधी के समस्त कृतित्व को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करनेवाली किताबें भी बहुत कम हैं और हो भी कैसे?"4 गांधी को सही परिप्रेक्ष्य में सामने लाने का संकल्प लेकर इस पुस्तक के लेखक ने संपूर्ण गांधी वाङ्मय में संकलित गांधी के लेखों एवं भाषणों को ही आधार बनाया है। अंग्रेजी में लिखी गांधी को भ्रष्ट करके प्रस्तुत करनेवाली तमाम किताबों से पर्याप्त दूरी रखी है। सबसे ज्यादा उपयोग यहाँ पर आचार्य कृपलानी (जे.बी.) की अंग्रेजी में लिखी पुस्तक के हिंदी अनुवाद महात्मा गांधी : जीवन और चिंतन का किया है। इसलिए कि जे. बी. कृपलानी पूरे मन से गांधीजी, कांग्रेस और राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़े रहे। गांधीजी पर बिना किसी लाग-लपेट के गहन विचार किया जा सके इस दृष्टि से निखिल चक्रवर्ती जैसे प्रसिद्ध वामपंथी बुद्धिजीवी के व्याख्यानों लेखों से मदद ली गई है। इस मदद से जाहिर है कि श्री भगवान सिंह कठमुल्लावादी वामपंथियों के विरोधी हैं- तार्किक प्रबुद्ध वामपंथियों के नहीं। इस पुस्तक की वैचारिक अंतर्यात्रा में यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि श्री भगवान सिंह को वामपंथियों से कोई 'एलर्जी' है वे अपने विचार और मूल्यांकन में ग.मा. मुक्तिबोध के साथ हैं जो अपनी इतिहास की पुस्तक में गांधी को लोकनायक मानते हैं। मुक्तिबोध ने अपनी सर्वाधिक प्रसिद्ध लंबी कविता 'अँधेरे में' में भी गांधी-चिंतन की उदात्त मूल्य-चेतना का प्रतिपादन किया है। माखनलाल चतुर्वेदी ने गांधी को 'कर्मवीर' मानकर 'कर्मवीर' नाम का अखबार ही निकाला था जिसका हिंदी नवजागरण और क्रांतिकारी पत्रकारिता के इतिहास में बहुत ऊँचा स्थान है। हिंदी साहित्य के अध्ययन-अध्यापन से जुड़े श्री भगवान सिंह ने गांधी जैसे गैर- साहित्यिक विषय पर विचार-चिंतन का 'अरमान' इसलिए भी रखा कि वे साहित्य के गांधी-पाठ का विखंडन कर सकें और इस विखंडन से स्थापित भ्रांतियों को विस्थापित करते हुए पुनः विचार की अग्निधर्मा दीप्ति से पाठक को नया अर्थ- प्रकाश दे सकें।

दरअसल, इसी आंतरिक अरमान की शक्ति से भरे हुए मन ने अनुभव किया है कि गांधी के दलित जागरण को व्यापक अर्थ व्यंजनाओं में खोलते हुए राष्ट्रव्यापी जागरण, संघर्ष की सर्जनात्मकता और भारतीय आधुनिकता की आधुनिक दृष्टि से मूल्य-मीमांसा होनी चाहिए। इसी दृष्टि से इस पुस्तक के प्रथम और द्वितीय प्रकरणों में पूरनचंद्र जोशी की भूमि पर खड़े होकर आंतरिक उपनिवेशवाद' को विवेचन-विश्लेषण का मुद्दा बनाया है। पुस्तक के प्रथम अध्याय' अस्पृश्यता-निवारण- जागरण' के अंतर्गत गांधी और स्वाधीनता संग्राम के क्षेत्र में सोचा गया। है। गांधी के द्वारा चलाए गए अस्पृश्यता- आंदोलन या अछूतोद्धार आंदोलन की उपेक्षा और अपेक्षा पर विचार करते हुए कहा गया कि "गांधीजी की दृष्टि में दलित केवल अछूत जातिवाले ही नहीं थे और न दलित" का अर्थ कभी केवल अछूत जाति तक सीमित रहा।"[5] वे 'अछूत' और 'अस्पृश्य' जैसे शब्दों का ही प्रायः प्रयोग करते रहे और आंदोलन भी अछूतोद्धार' या 'अस्पृश्यता निवारण' के नाम से चलाया। लेकिन इधर की राजनीति ने अछूत-अस्पृश्य को हटाकर इन्हें 'दलित' कहना उचित समझा है। इतना ही नहीं बाबा साहेब अंबेडकर की वैचारिक राह पर बढ़ते हुए गांधी को दलित विरोधी मान लिया है। इसमें दिलचस्प तथ्य यह है कि गांधी के जीवनकाल में ही अंबेडकर ने उन्हें दलितों का उद्धारक कभी नहीं माना। गांधी की पूरी राजनीति को अंबेडकर ने सवर्णवादी पूँजीपतियों की खोखली और 'दयनीय दिवालियापन से भरी' कहकर कहा कि उनके कारण "राजनीति तो असहय गंदगी और मलवाले गंदे नाले जैसी बन गई है।"[6] फिर यह कहना कि गांधी के दलित उत्पीड़न आंदोलन से सूत्र पाकर अंबेडकर ने दलित आंदोलन खड़ा किया- कोई तर्क नहीं बनता। बाबा साहेब अंबेडकर के शोधपरक लंबे लेख "भारत में जाति प्रथा : संरचना, उत्पत्ति और विकास पर ध्यान देना चाहिए। यह लेख उन्होंने 1916 में कोलंबिया यूनिवर्सिटी, न्यूयार्क, अमरीका में आयोजित डॉ. ए. ए. गोल्डन वाइजर गोष्ठी में नृविज्ञान को आधार बनाकर पढ़ा था। प्रायः गांधी-भक्त अंबेडकर के इस लेख की उपेक्षा करते हैं जबकि इसी लेख में अंबेडकर

के चिंतन के सभी बुनियादी सरोकार निहित हैं। तमाम दलित लेखक इसी लेख को आधार बनाकर गांधी को दलित-विरोधी घोषित करते रहे हैं। असल में अंबेडकर भारतीय जाति प्रथा के आर्थिक आधार पर न जाकर 'धार्मिक आधार' को पकड़ते हैं और हिंदू धर्म की गांधी व्याख्या से गहरा असंतोष व्यक्त करते हैं। गांधी की 'हरिजन' धारणा का विरोध करते हुए तथा 'हरिजन' पत्र में छपनेवाले भाषणों का विरोध करते हुए उन्होंने अपने विचार को दृढ़ता से स्थापित किया है। हमें अंबेडकर द्वारा 'जाति प्रथा उन्मूलन' और महात्मा गांधी को दिया गया उत्तर का भाष्य पुनर्भाष्य करना होगा। श्रीभगवान सिंह ने गांधी विचार के तर्कों का समर्थन करते हुए अंबेडकर के विचार-दर्शन को भुला दिया है। नतीजा यह हुआ है कि वे यह कहते रह गए हैं कि "प्रकट है कि गांधी को कैसे दलित विरोधी सिद्ध किया जाए, इसके जुगाड़ में दलित लेखकों की तुलना में गैर दलित लेखक अधिक सक्रिय हैं।"[7] क्यों सक्रिय हैं? इसलिए कि गांधी पर उच्च सवर्ण कांग्रेसवाद की राजनीति का दबदबा रहा है। इस बात को गांधी न समझते हों ऐसी बात नहीं थी। गांधी नहीं चाहते थे कि आजादी का आंदोलन ध्वस्त हो इसलिए वे सवर्णवादियों की करतूतों को झेलते रहे। यह सच है गांधी की निगाह में पूरा देश था- बड़ा विजन था, अंबेडकर का विजन- 'टनल-व्यू' या सीमित- केवल दलितों तक सिमटा। इसी अर्थ में गांधी 'राष्ट्रपिता' हैं अपनी तमाम कमियों के बावजूद। इस गांधी पक्ष का श्री भगवान सिंह ने बड़ा भरा-पूरा विवेचन यहाँ किया है। उनकी पहली पुस्तक गांधी और हिंदी राष्ट्रीय जागरण के बाद पूरे राष्ट्रीय जागरण में गांधी को देखने की जरूरत थी और वह कार्य यहाँ किया भी गया है। यहाँ गांधी के पक्ष को प्रस्तुत करते हुए कहीं भी अंबेडकर का अवमूल्यन नहीं किया है। न यहाँ किसी विचारधारा की गुलामी मौजूद है।

अतएव, कहना न होगा कि भारतीय नवजागरण के साथ ही महात्मा गांधी दलित नवजागरण पर भी गंभीरतापूर्वक विचार किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

(1) बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर संपूर्ण वांगमय, खंड-1, पृष्ठ-250

(2) गांधी और दलित भारत जागरण- श्री भगवान सिंह , पृष्ठ-12

(3) वही. पृष्ठ- 13

(4) वही, पृष्ठ- 13

(5) वही, पृष्ठ- 17

(6) बाबासाहब डॉ०. भीमराव अंबेडकर संपूर्ण वांगमय, खंड- 1, पृष्ठ- 274

(7) वही, पृष्ठ- 19

संप्रत्ति : अतिथि प्राध्यापक, राजनीतिशास्त्र विभाग

एम.आर. एम. महाविद्यालय, दरभंगा (बिहार)